डॉ. आशारानी लाल

"माइयो जनमेली"

एह दुनिया में रोजे कुल कइगो अचरज होत रहेला, बाकी एके सब केहू जल्दी बुझ ना पावेला. जे बूझ जाला ओहिके नऽ लाल बुझकड़ कहल जाला. अइसन हट्ठी नर्स कबो देखले ना रहीं - ए बाछी. उ केतना अड़ियल मेहरारु रही बुझाते ना रहे. ओह दिने उहे लाल बुझकड़ बन गइल रही.लाली नऽ ऊ ठनगन करे.

ई बात साँच रहे कि एगो लाल क जनम ऊ करवले रही बाकी कहँस कि ऊ दुगो जनम करवले बाड़ी, जेकर नेग डबल होला, यानी दूना. सभे सुनते चिहूँक गइल. कवनो जेउँका बच्चा तऽ भइल ना रहे, फेर दुगो जनम के नेग कइसन?

__ अरे! रउआ सभे के बुझात नेइखे का - कि पहिल-पहलवँकी क बबुआ न भइल बान.

__ हँऽ ई. बात तऽ टीक बा, तब खुशी से तनी बढ़-चढ़के रउवा के नेग मिली, बाकी रउवा तऽ डबल इनाम माँगतानी आ कहतानी कि दूगो जनम रउआ करवले बानी.

__ अच्छा रउआ लोगिन क नइखे बुझात, तब उहाँ खड़ा ओह तिनों जानी से रउआ लोग पूछ लीं नऽ.

__ ओइसन दारुन दुःख क माहौल में तऽ हम बोलावल गइल रहीं. बाछी कतना छटपटात रही. उनकर दुःख-दरद आ पीरा देख के तऽ सबका मुँह पर फँफरी पड़ गइल रहे.

__ ई बात सही बा कि नर्स अवते सूई देहली. दरद खूबे बढ़ गइल. बाछी बहुते चिघरली, तबो नर्स धबड़इली नाही. बच्चा क जनम कराइए देहली. चारों ओरी खुशी पसर गइल लागल कि अच्चके में अन्हरिया घर में अँजोरिया छा गइल. केहू थरिया बजावल, तऽ केहू-केहू कुल बहुते जतन करे लागल.

__ बाकी ई का ? नर्स के एकही जोर क बोली- चील्ह क झपट्टा बन के निकलल आ एकही झटका में सबकर खुशी झटकके लेके उड़ गइल। ऊ नर्स जे बच्चा करा के ओह बचवे ओरी तिकवत रही आ ओकर कइगो जतन करे में लागल रही जोर से बोलके सबके कगरी क दीहली. ऊ कहली कि-" बच्चा करिया पड़ल जाता, आ ई तऽ रोवतो नइखे तबो सब सुशिए मनावे में बेचैन बा. एह लोगिन क मुँहे सोहर निकलता आ हँसी फूटता."

— नर्स झट्ट से ओह लाल के उठाके उलटे टाँग लेली, आ लगली थपथपावे कि बाछी क आँख आ मुँह दुनू खुल गाइल. मुँह से निकसल - "बाप रे." लागल कि ई बचिया ओह नर्स क बोली सुनली, तबे चट्ट से उनकर आँख आ मुँह दुनू बवा गइल.

सब ओनिए ताके लागल. कहली लोग - अरे ई का भइल? बचिया चिलइली काहे इनकर लाल ओठ त दरद-पीरा से करिया पड़ गइल रहल हऽ. अँखिया मुदाइए गइल रहल हऽ. तब कइसे दुनू एके झटका में चट्ट खुल गइल हऽ, तब अब का भइल ए- दादा?

__ बचिया अपना लाल के उल्टा टाँग के थपथपावत देखली तऽ उनकर मुंह खुल गइल. ऊ जाग गइली आ तबे इनका मुँह से निकसल रहे- "अरे ! बापरे." बाकी ईकुल कइसे भऽ गइल, ई बात केहू ना बूझ पावल.

__ सब मेहरारू जे उहाँ खड़ा होके एक टक ई कुल देखली, ऊ डेरा गइली. आपसे में लगली लोग बतियावे - अब कवन पीरा एह बबुनी के सतावे लागल. काहे अइसन बात ऊ बोललली हऽ कि एही बिचे उनकर लाल केहाँ- केहाँ करे लगलन.

__ नर्स खुश भऽ गइली. ऊ झट से बोल परली कि - दुसरको जनम भऽ गइल. ऊ सबके बतवली कि माई अपना मुँहे-आँखे एह बचवा के अइसन चटली आ सुहरवली हऽ कि एकर जिनगी लवट आइल हऽ. उनकर लाल रोवे लगलन हँऽ. हमरा थपथपावे से कुछू ना होइत, अगर उनकर माई अपता लालके भर-नजर देखले ना रहती आ अपना मुँहे पुचकरले ना रहती. हम तऽ थपथपवते रह जइतीं. ई तऽ माई क मोह-माया न रहल हऽ, जवन उनका आँख खोलते उहाँ चहुँपल हऽ आ उनकर बबुआ केहाँ-केहाँ करे लगलन हँ.

__ तोहन लोग तऽ देखबे कइलुहऽ लोग कि ऊ कतना श्याह पर गइल रहन. माइये के चटले-चुटले से नऽ उनकर करिया से गोर भऽ गइल हऽ. माई आँखे देखली हऽ तबे नऽ मुँहे बोलके चटली आ सुहरवली हऽ. सभे जानता आ देखलहुँ बा कि गइया अपना बचवा के

देखते अपन घनघोर पीड़ा चट्ट से भुला जाले, लागेले अपना मुँहे ओके चाट-पोंछ के ओह अपना बचवा के भूड़याँ से उपर कर देले आ उठा देले. इहे बात एहू बचवा संगे न भइल हऽ.

__ ऊ नर्स सबसके बता देली कि पहिल-पइलँवठी क सँगही हरदम माइयो जनमेली. एहुजा _ "अरे! बापरे" कहिके बबुआ क माइए न जनमली हऽ.

__ एगो पीरा में दूगो जनम, पहिल-पइलँवठिए के संगे होला, जेके जच्चा-बच्चा कहल जाला.

__ इहे कुल अइसन बात रहे कि नर्स आज डबल नेग मंगले रही, जेसे ऊ लाल 'बुझक्कड़' बन गइल रही.

__साँचो नऽ कबो-कबो झटके में केहू-केहू के बड़हन पदवी भेंटा जाला. ई 'लाल-बुझक्कड़' ओह दिने सबकर आँख खोल देले रही कि - "माइयो जनमेली."

____ मो.नं.०-9968438886

डी-II,147,काकानगर

नई दिल्ली -110003 .